MT EDUCARE LTD.

ICSE X **SUBJECT : HINDI**

BOARD PAPER – 2013

ANSWERSHEET

(खण्ड'क')

A.1

1) **''परिवार का ऐसा सदस्य जिससे मैं प्रभावित हुआ''**

परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है और माता उसकी प्रथम गुरू होती है । वह जिस प्रकार से बालक को पोषित व पुष्पित करती है वह उसी रूप में विकसित होकर समाज के समक्ष आता है । मेरे जीवन में भी मेरी माता की अहम् भूमिका है। पिता व्यापारी होने के कारण अधिक व्यस्त रहते थे। परिवार के अन्य लोगों से भी मेरी अधिक समीपता नहीं थी परन्तु मेरी माता मेरे साथ परछाँई की तरह रहती थीं । अत: मैं उनके आचरण से ही बहुत प्रभावित हुआ ।

प्रात:काल जल्दी उठना, ईश्वर वन्दना, परिवार के बड़े लोगों को प्रणाम करना, पुन: अपनी नियमित दिनचर्या का पालन करना मुझे मेरी माता ने सिखाया। प्रत्येक कार्य समय पर और तरीके से करना चाहिए तभी पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। ऐसा मेरी माँ कहती थी । जीवन में सदैव सच्चाई व ईमानदारी का पालन करना मैंने अपनी माँ से ही सीखा । असहाय, दीन-दु:खी जन की सहायता व सेवा करना मैंने अपनी माँ से ही सीखा । अपनी माता को प्रात:काल से रात तक निरन्तर परिश्रम करते देख मुझ में परिश्रमी बनने की भावना का विकास हुआ । किसी भी कार्य को पूरी ईमानदारी, लगन और परिश्रम से करता हूँ । मानव मात्र का सम्मान करने की भावना मुझमें माँ से आई । इसीलिए आज मैं सबके सम्मान का पात्र हूँ । मुझे याद है मेरी माँ कहा करती थी बेटा जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे।

मेरी माता ने सदैव ईश्वर में आस्था रखने की शिक्षा दी। मैं प्रतिदिन विद्यालय जाने से पूर्व देवालय में पूर्ण श्रद्धा से ईश्वर के समक्ष अपना मस्तक झुकाता हूँ । मेरी माता की शिक्षा का ही परिणाम है कि मैं अपना प्रत्येक कार्य समय से करता हूँ । अत: मेरा कोई कार्य अधूरा नहीं रहता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क रहता है । यह मंत्र मुझे मेरी माता ने दिया फलस्वरूप मैं नियमित व्यायाम करके स्वयं को स्वस्थ रखता हूँ । समय से प्रात:काल जागना और समय पर रात को सोना जीवन को सफल बनाता है। इससे आप सदैव स्फूर्तियुक्त रहते हैं। यही कारण है कि मुझमें आलस्य लेशमात्र भी नहीं है।

अन्त में मैं यही कहूँगा कि मेरी माता गुणों की खान हैं और सारे गुण उसने मुझमें उड़ेल कर मेरा हित किया है ताकि मैं एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में उभर कर सामने आऊँ और जीवन के किसी भी मोड़ पर किसी भी संकट का सामना साहस से कर सकूँ । **[15]**

2) **''त्योहारों का महत्त्व बताते हुए उसके प्रति उत्साह एवं आस्था का अभाव''**

भारत में त्योहारों का जाल-सा बिछा हुआ है । इन त्योहारों का संबंध विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, रीति-रिवाज़ों, सामाजिक परंपराओं, किंवदंतियों तथा मान्यताओं से होता है ।

यदि समय-समय आने वाले ये त्योहार न हों, तो हमारा जीवन सूना-सूना तथा शुष्क प्रतीत होगा । ये त्योहार हमारे जीवन में प्रसन्नता तथा उत्साह का संचार करते हैं, परंतु आजकल त्योहारों के प्रति आस्था का अभाव देखा जा सकता है । वर्तमान भाग-दौड़ के जीवन तथा पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से लोग इन्हें परंपरागत ढंग से मनाने में उत्साह का प्रदर्शन नहीं करते । वे केवल औपचारिकताएँ निभाने में ही अपने कर्तव्य की इति-श्री मान लेते हैं । उदाहरण के लिए होली पर अपने कर्तव्य की इति-श्री मान लेते हैं । उदाहरण के लिए होली पर परस्पर गले मिलना, पुरानी शत्रुता को विस्मृत कर देना जैसी बातों का अभाव हो गया है । दीपावली का पर्व एक

दूसरे के घर उपहारों के आदान-प्रदान तक सिमट कर रहा गया है तथा केवल पटाखों के शोर में लुप्त होता दिखाई दे रहा है इसी प्रकार रक्षा बंधन के त्योहार पर भाई अपनी बहनों को कुछ धनराशि देकर ही संतुष्टि का अनुभव कर लेते हैं । अन्य त्योहारों पर पहले जैसा उत्साह दिखाई नहीं पड़ता । कुछ लोग तो इन त्योहारों के प्रति इतने उदासीन हो जाते हैं कि इन्हें पारंपारिक ढंग से मनाने को ढोंग या दिखावा की संज्ञा दे देते हैं ।

सभी त्योहार अपना-अपना महत्त्व रखते हैं तथा जीवन के सूनेपन को दूर कर हमें नैतिक मूल्यों से जोड़े रखते हैं । ये सभी त्योहार हमें अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, रीति-रिवाज़ों, मान्यताओं, जीवन-दर्शन तथा भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों से जोड़े रखते हैं । त्योहार चाहे किसी भी धर्म से जुड़े हों वे हमारे जीवन को उल्लास, उमंग,स्फूर्ति, नव-चेतना, सद्‌भाव, स्नेह, मैत्री तथा सांप्रदायिक सद्‌भाव से भर देते हैं । त्योहारों को मनाने का कारण चाहे कुछ भी हो, उनसे कोई-न-कोई प्रेरणा अवश्य प्राप्त होती है । ये देश की एकता और अखंडता को मज़बूत करते हैं । ये त्योहार हमें धर्म, न्याय तथा सच्चाई के मार्ग पर ले जाते हैं । यही नहीं स्थिति तो यह है कि इन त्योहारों पर धार्मिक सद्‌भाव के दर्शन भी होते हैं । दीपावली पर आतिशबाज़ी बनाने वाले कारीगर मुसलमान होते हैं, इसी तरह गणेश चतुर्थी, दुर्गा पूजा पर मूर्तियाँ बनाने वाले लोग भी अन्य धर्मों से जुड़े होते हैं । ईद पर हिंदू तथा सिक्ख भाई भी मुसलमानों को ईद की बधाई देते देखे जा सकते हैं । होली के अवसर पर इस प्रकार का भेदभाव प्राय: मिट जाता है कि जिस पर रंग डाला जा रहा है, वह किस धर्म को मानता है । क्रिसमस पर सभी धर्मों के लोग खुशियाँ मनाते हैं । इस प्रकार ये सभी त्योहार सांप्रदायिक सद्‌भाव को पुष्ट करते हैं । इस प्रकार ये सभी त्योहार सांप्रदायिक सद्‌भाव को पुष्ट करते हैं । राष्ट्रीय त्योहार हममें देशभक्ति, त्याग और बलिदान की भावना भरते हैं ।

हमारा कर्तव्य है कि हम त्योहारों को सच्ची आस्था, श्रद्‌धा एवं विश्वास से मनाएँ तथा उनसे मिलने वाले संदेशों को अपने जीवन में उतारें । **[15]**

3) **''इन्टरनेट का अभूतपूर्व योगदान व हानि''**

आवश्यकता अविष्कार की जननी है । यह कथन इन्टरनेट के सन्दर्भ में सही साबित होता है। आधुनिक समय में जहाँ समय का मूल्य बढ़ गया है वही इन्टरनेट की उपयोगिता महत्त्वपूर्ण हो गई है।

आधुनिक समय में इन्टरनेट का प्रयोग जीवन के सभी क्षेत्रों में हो रहा है। सुरक्षा सम्बन्धी क्षेत्रों के अलावा अब इसका व्यापक रूप से प्रयोग उद्योग, उत्पादन, वाणिज्य, वितरण व परिवहन आदि सभी क्षेत्रों में किया जा रहा है । बाजार भाव उठने-गिरने का संकेत भी इन्टरनेट द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है ।

बैंकों के लिए इन्टनेट का अभूतपूर्व योगदान है । बड़े-बड़े खातों के रख-रखाव और पैसों के लेन-देना की माथापच्ची से जहाँ एक ओर बैंक कर्मचारियो को फुर्सत मिलती है वहीं सभी संस्थानों, प्रतिष्ठानों में बिल भी कम्प्यूटर इन्टरनेट होने से भुगतान किये जा सकते हैं। आजकल बैंको में रिजर्व बैंक तथा व्यापारिक बैंकों में इन्टरनेट का प्रयोग अधिकाधिक होने लगा है। जीवन बीमा निगम के जटिल कार्यों से निपटने के लिए इसी का प्रयोग किया जाता है।

हमारी अन्तरिक्ष यात्राएँ इन्टरनेट पर आधारित हैं । इसके अभाव में न तो रॉकेट व उपग्रह अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित किये जा सकते हैं और न ही उनका निरीक्षण किया जा सकता है। अन्तरिक्षीय यात्राओं का निर्देशन इन्टरनेट के माध्यम से ही सम्भव है साथ ही अन्तरिक्ष से प्रेषित चित्रों का विश्लेषण भी इन्टरनेट से ही किया जा सकता है।

अब आई. आर. सी. टी. सी. की वेबसाइट के माध्यम से घर बैठे ही किसी भी गन्तव्य के लिए रेलवे टिकट इन्टरनेटा से बुक किये जा सकते हैं। हवाई टिकट, बस यात्रा की टिकट अब घर बैठे इन्टरनेट से प्राप्त की जा सकती है । गैस सिलेण्डर की बुकिंग व बिल अदायगी सब कुछ इन्टरनेट से सम्भव है। इन्टरनेट की सहायता से हम चलचित्र का आनन्द भी ले सकते हैं।

सभी राष्ट्रों में शिक्षण कार्य में जटिल से जटिल समस्याओं के समाधान में, अपराध निराकरण आदि में इन्टरनेट बहुत सहायक है।

इन्टरनेट से विवाह कराने तथा ज्योतिष आदि में भी बहुत सहायता मिलती है। हम घर बैठे इन्टरनेट के माध्यम से आमने-सामने बातचीत कर सकते हैं।

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। एक ओर यदि इन्टरनेट के अनेक लाभ हैं तो वहीं अनेक हानियाँ भी हैं। इन्टरनेट हिंसा को जन्म देता है। इन्टरनेट के माध्यम से अश्लीलता व धोखेबाजी के अनेक मामले सामने आये हैं। भोली-भाली लड़कियों को चैटिंग द्वारा फँसाकर, उनकी ब्ल्यू फिल्म बनाना इन्टरनेट के खतरनाक खेल हैं। इन्टरनेट द्वारा बहुत से लोग गलत कार्यों को अंजाम देते हैं। आजकल इन्टरनेट अपराधी प्रवृत्ति को तेज रफ्तार से जन्म दे रहा है। इसका जीता जागता उदाहरण साइबर क्राइम है। लोग इन्टरनेट के द्वारा दूसरे लोगों के क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड्स आदि का पासवर्ड चुराकर उनके खाते में से पैसे उड़ा देते हैं। इन्टरनेट को बहुत-सी ''सोशल नेटवर्किंग साइट'' से जोड़कर लोगों को गलत काम में फँसा दिया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इन्टरनेट जितना लाभकारी है उसके दुरुपयोग से होनेवाले परिणाम उससे अधिक घातक हैं। **[15]**

4) **''परिश्रम ही सफलता का सोपान है ।''**

एक किसान के चार पुत्र थे । चारों मेहनत करने से बचते थे । यही कारण था कि उनका मन खेती के कार्यों में नहीं लगता था । इस बात से किसान बहुत दुखी और परेशान रहता था ।

एक बार किसान बीमार पड़ गया । उसे लगा कि उसकी जाने की घड़ी निकट आ गई है । उसने अपने चारों पुत्रों को बुलाया और कहा कि मैंने अपना सारा धन खेतों में गाड़ दिया है । मेरी मृत्यु के बाद तुम खेत खोदकर धन निकाल लेना और आपस में बराबर - बराबर बाँट लेना ।

किसान की मृत्यु के पश्चात् चारों ने सोचा क्यों न गड़ा हुआ धन निकाल लिया जाए । यह सोचकर चारों ने खेतों की खुदाई प्रारंभ कर दी । वे दिन भर खेतों की खुदाई करते रहे उन्होंने खेत का कोना-कोना खोद डाला पर कहीं भी उन्हें गड़ा हुआ धन न मिला । चारों निराश होकर वहीं बैठ गए ।

तभी उधर से पंडित दीनानाथ निकले । किसान के बेटों को उदास देखकर उन्होंने उसका कारण पूछा । उन्होंने सारी बातें सच - सच बता दीं । पंडित जी कुछ सोचने लगे फिर मुस्कराकर बोले, ''जब खुदाई कर दी है तो तुम खेतों में बीज बो दो ।'' चारों भाइयों ने उनकी बात मानकर बीज बो दिए । थोड़े दिन बाद उनसे छोटे - छोटे पौधे निकल आए । देखते - देखते फसलें लहलहा उठीं । फ़सल पकने पर सबने मिलकर फ़सल काटी और बाज़ार में बेच दी । इससे उन्हें खूब आमदनी हुई । जब वे वापस आ रहे थे, तो रास्ते में उन्हें फिर पंडित दीनानाथ मिले । उन्होंने चारों से पूछा, ''क्या बात है ? तुम सब बहुत प्रसन्न नज़र आ रहे हो ।''

किसान का एक बेटा बोला, ''श्रीमान हमें खेतों में गड़ा धन तो नहीं मिला परंतु आपकी सलाह ने हमें बहुत लाभ पहुँचाया । आपकी सलाह ने हमें फ़सल के रूप में काफ़ी धन दे दिया ।

पंडित दीनानाथ मुस्कराते हुए बोले, ''तुम्हारे पिता ने ठीक कहा था कि खेतों में धन गड़ा हुआ है । तुमने परिश्रम किया और तुम्हें वह मिल गया । सदा याद रखो परिश्रम ही सफलता का सोपान है परिश्रम के बिना जीवन में कुछ नहीं मिलता ।'' **[15]**

5) प्रस्तुत चित्र में सेना के चार अफसर दिखाई दे रहे हैं । वे सेना की वर्दी पहने हुए हैं । उनके दो नवयुवक खड़े हुए हैं जो सेना के जवान अर्थात् अफसरों के सहायक प्रतीत होते हैं । बीच में खड़े दो अफसरों की बाँहों में एक बच्चा है जो सेना के जवान अर्थात् अफसरों के सहायक प्रतीत होते हैं। बीच में खड़े दो अफसरों की बाँहों में एक बच्चा है जो तौलिया में लिपटा हुआ है। वे सब बड़े प्यार से उस बच्चे को देख रहे हैं।

एक बार की बात है कि भारतीय सीमा रेखा पर अचानक आतंकवादियों ने हमला कर दिया । संयोग की बात तो यह थी कि हमारे जवान सावधान थे अत: उनके आक्रमण का मुँह-तोड़ जवाब दिया गया । दोनों तरफ से गोलियों की धाँय-धाँय सुनाई दे रही थी। बड़ी भयंकर परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी हमारी सेना के अफसर्रो व जवानों ने बड़ी कुशलता से उन पर काबू पाने का प्रयास किया जब वे धीरे-धीरे भागने की कोशिश कर रहे थे तभी हमारे जवानों ने उनके कई जवान ढेर कर दिये । उसी समय मेज़र पौरुष को खबर मिली कि रामवीर नामक जवान की पत्नी गर्भावस्था में दर्दो से कराह रही थी। उन्होंने तुरन्त उसे पास ही के सैनिक अस्पताल में भर्ती करने

के आदेश प्रदान किये । लगभग दो घंटे की मशक्कत के पश्चात् उस नारी ने एक कन्या को जन्म दिया । तब तक सारा युद्ध समाप्त हो चुका था और सभी अफसर और जवान सीमा से वापस आ चुके थे। लौटने के पश्चात् उन्हें जब यह शुभ समाचार मिला तो वे बहुत खुश हुए । बच्ची को तौलिया में लपेटकर उनके पास लाया गया उन अफसरों ने बच्ची को अपनी बाँहों में उठाया और ईश्वर को धन्यवाद दिया कि हे प्रभु तूने ऐसे कठिन समय में जब आतंकवादियों के हमले के समय अफरा-तफरी मच गई थी तब दो जानों को जिन्दगी दी।

अपनी इस सफलता पर उन्हें हर्ष हुआ और उन्होंने उस बच्ची का नाम वीरा रखा और उसे उसकी माँ के पास वापस भेज दिया । **[15]**

A.2

1) सेवा में,
श्रीमान् स्वास्थ अधिकारी,
नगर निगम,
दिल्ली।
दिनांक : 14 - 2 - 2013

विषय : <u>सड़कें टूटी होने के कारण जल-भराव एवं स्पीड-ब्रेकर से होनेवाली यातायात असुविधा ।</u>

माननीय महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं नगर निगम अधिकारियों का ध्यान अपने क्षेत्र चाँदनी चौक की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जहाँ टूटी-फूटी सड़कों के कारण पानी भर जाता है और कीचड़ हो जाती है । फलस्वरूप यहाँ गन्दगी का साम्राज्य है । घरों में रहना व वहाँ से निकलना दूभर हो गया है । दुर्गन्ध से साँस बन्द हो जाती है।

वहीं एक नई समस्या स्पीड-ब्रेकर की है । एक तो सँकरा रास्ता, दूसरे कीचड़ और तीसरे खतरनाक स्पीड-ब्रेकर। ऐसा प्रतीत होता है मानों वहाँ से निकलना एक बहुत बड़ा दण्डनीय अपराध है । यहाँ रहने वालों का जीवन नर्क बन गया है ।

महोदय, आपसे हार्दिक निवेदन है कि हमारे क्षेत्र की समस्या का समाधान कराने हेतु सम्बन्धित अधिकारी को निर्देश प्रदान करें ताकि हमें इस परेशानी से छुटकारा मिल सके । आशा है कि आप शीघ्रतिशीघ्र हमें इस समस्या से मुक्त करायेंगें ।

सधन्यवाद ।
भवदीय,
करन वर्मा
74, किनारी बाजार कॉलोनी,
रमन वाटिका,
दिल्ली । **[7]**

2) 34, श्याम नगर,
राधा बिहार,
मेरठ ।
दिनांक : 15 - 2 - 2013
पूजनीया माताजी,

सादर चरण स्पर्श ।

कुशल पूर्वक रहकर आपकी सपरिवार कुशलता की कामना करता हूँ । माँ ! मैं आपको पत्र यह बताने के लिए लिख रहा हूँ कि मेरे विद्यालय में एक बहुत बड़ी प्रतियोगिता का आयोजन किय गया था, जिसके

निर्णायक के रूप में लगभग दस लोगों को बाहर से आमन्त्रित किया गया था । मेरे प्रधानाचार्य जी ने उनके आदर-सत्कार से लेकर उनके ठहरने, खाने-पाने आदि की व्यवस्था का उत्तरदायित्व मुझे ही सौंपा । पहले तो मुझे थोड़ी घबराहट हो रही थी परन्तु फिर मैंने हिम्मत से काम करने का निश्चय किया ।

सबसे पहले तो मैंने अपने विद्यालय के पास के होटल में उनके रहने, खाने आदि की व्यवस्था की और एक मित्र के पिता की सहायता से एक कार का प्रबन्ध करवा दिया जिससे अतिथि गणों को आने-जाने में किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो । यह प्रतियोगिता पाँच दिन चली । पाँचवे दिन जब प्रतियोगिता का समापन समारोह हुआ तब सभी अतिथियों ने मेरे प्रधानाचार्य जी से मेरी बहुत प्रशंसा की ।

माँ यह सब सुनकर मुझे इस बात की प्रसन्नता हुई कि मैं प्रभु की कृपा से इस उत्तरदायित्व का बखुबी पालन कर सका । शेष सब कुशल है पिताजी को मेरा चरण स्पर्श कहिए एवं छोटी बहन को ढेर सारा प्यार ।

पुत्र की प्रतीक्षा में,

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

राहुल **[7]**

A.3

i) नामू की माँ ने उसे पलाश के पेड़ की छाल उतारकर लाने का आदेश दिया था । माँ के आदेश का पालन करते समय उसने सोचा कि मेरे बार-बार कुल्हाड़ी चलाने से पेड़ को अवश्य पीड़ा होती होगी । **[2]**

ii) नामू ने घर आकर कुल्हाड़ी से अपने पैर रगड़ने शुरू कर दिए जिससे पाँवों से खून बहने लगा और उसे पीड़ा भी होने लगी । उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह यह अनुभव करना चाहता था कि जिस प्रकार कुल्हाड़ी के प्रहार से मुझे पीड़ा हो रही है क्या उसी प्रकार की पीड़ा पेड़ को भी हुई होगी । **[2]**

iii) अपने पुत्र के पैरों से खून निकलता देखकर माँ चिंतित हो उठी । जब उसके पुत्र ने कहा कि वह कुल्हाड़ी की रगड़ से यह जानना चाहता था कि क्या पेड़ को भी इसी प्रकार की पीड़ा हुई होगी तो यह सुनकर माँ का हृदय भर आया । **[2]**

iv) संतों का स्वभाव होता है कि वह दूसरों के दु:ख दर्द को महसूस करते हैं तथा उनमें दया और धर्म का भाव होता है । आगे चलकर 'नामू' नामदेव के नाम से प्रसिद्ध हुए, जो महाराष्ट्र के विख्यात संत हुए । **[2]**

v) इस गद्यांश से हमें शिक्षा मिलती है कि हमारे मन में जीवों के प्रति ही नहीं बल्कि पेड़ - पौधों के प्रति भी दया की भावना होनी चाहिए । हमें वृक्षों का संरक्षण करना चाहिए तथा उन्हें किसी प्रकार से हानि नहीं पहुँचानी चाहिए क्योंकि वृक्ष ही जीवन का आधार हैं । **[2]**

A.4

i) (a) नीति - नैतिक **[½]**

(b) साहित्य - साहित्यिक **[½]**

ii) (a) मार्ग - पथ, रास्ता **[1]**

(b) माता - जननी, अम्बा **[1]**

iii) (a) निर्दोष × दोषी **[½]**

(b) शान्त × अशान्त **[½]**

	(c) पतन × उत्थान	[½]
	(d) अन्त × आदि	[½]
iv)	(a) **आँख पर पर्दा पड़ना** - मेरे मित्र की आँखों पर पर्दा पड़ गया है। परीक्षा के दिनों में देर रात तक दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखता रहता है।	
	वाक्य - मेरे मित्र की **आँखों पर पर्दा पड़ गया है**। परीक्षा के दिनों में देर रात तक दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखता रहता है।	[1]
	(b) **हाथ मलना** - पछताना ।	
	वाक्य - समय का सदुपयोग न करने वाले विद्यार्थी बाद में **हाथ मलते** रह जाते हैं ।	[1]
v)	(a) ईश्वर – ईश्वरत्व	[½]
	(b) उत्तम – उत्तमता	[½]
vi)	(a) असफल हो जाने बहुत पर, उसे बहुत दुःख हुआ।	[1]
	(b) परिश्रमी व्यक्ति विपत्तियों से नहीं घबराते हैं।	[1]
	(c) आजीवन मैं इसी आचरण का पालन करता आया हूँ।	[1]

❖❖❖❖